सड़क के कुत्तों की अधिकांश मौतें मनुष्य-प्रेरित

शोधकर्ताओं ने बताया है कि भारत में सड़क के कुत्तों (आवारा कुत्तों) की अधिकांश मौतें मनुष्य के प्रभाव से होती हैं। इसके अलावा, अध्ययन में यह भी पता चला है कि इसी वजह से 20 प्रतिशत से भी कम कुत्ते प्रजनन उम्र तक जी पाते हैं।

पश्चिम बंगाल में पांच वर्षों तक जनगणना-आधारित विधि से यह अध्ययन किया गया। एम. पौल व उनके साथियों ने यह समझने का प्रयास किया कि आवारा कुत्तों की जनसंख्या वृद्धि का पैटर्न क्या है और उनकी जल्दी मृत्यु के क्या कारण हैं। शोधकर्ताओं ने पिल्लों के 95 समूहों का अवलोकन किया जिनमें कुल 364 पिल्ले थे। इनमें से मात्र 19 प्रतिशत ही प्रजनन उम्र तक जीवित रहे। उन्होंने यह भी पाया कि 63 प्रतिशत मौतें मनुष्य के प्रभाव से हुईं।

शोधकर्ताओं के अनुसार मनुष्यों के आसपास रहने से कुत्तों को भोजन वगैरह ज़्यादा आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं मगर इसका प्रतिकूल प्रभाव भी होता है। लिहाज़ा सड़कों पर कुत्तों और मनुष्यों का सम्बंध काफी पेचीदा होता है।

जैसे शोधकर्ताओं ने पाया कि कुत्तों में लिंग के आधार पर मृत्यु दर में काफी अंतर होते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि लोग नर पिल्लों को उठाकर अपने घर ले जाते हैं जबकि मादा पिल्लों को सड़कों पर ही पड़े रहना पड़ता है जहां खतरे कहीं ज़्यादा होते हैं। विडंबना यह है कि ये नर पिल्ले भी ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहते क्योंकि जैसे ही वे थोड़े बड़े होते हैं और प्यारे लगना बंद हो जाते हैं, उन्हें वापिस सड़कों पर छोड़ दिया जाता है। शोधकर्ताओं में शामिल अनिंदिता भद्रा ने बताया कि आवारा कुत्ते विकाशील देशों में मानव बस्तियों के आम बाशिंदे हैं। ये प्रायः कूड़े-कचरे में से भोजन ढूंढकर खाते हैं। इन कुत्तों के प्रबंधन के लिए ज़रूरी है कि इनकी जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारकों की समझ हो। ***(स्रोत फीचर्स)***